Housing projects of some other States are also expected to be covered in the new credit lines.

In addition, the World Bank has also extended credit for financing a reconstruction and relocation programme in the earthquake-affected areas of Latur and Osmanabad in Maharashtra.

ग्रामीण क्षेत्रों के विकास हेतु धन

1185. **श्री अजीत जोगी:** क्या ग्रामीण क्षेत्र और रोजगार मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) गत दो वर्षों के दौरान प्रति वर्ष ग्रामीण क्षेत्रों के विकास हेतु राज्य-वार कितनी-कितनी धनराशि आवंटित की गई;

(ख) विकास परियोजनाओं के नाम क्या हैं और परियोजना-वार प्रत्येक राज्य को कितनी-कितनी धनराशि आवंटित की गई;

(ग) क्या सरकार को इस बात की जानकारी है कि पर्याप्त मात्रा में धन उपलब्ध न होने के कारण विकास कार्यों को अधूरा छोड़ दिया गया है; और

(घ) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और सरकार ने इस संबंध में क्या ठोस उपाय किये हैं?

ग्रामीण क्षेत्र और रोजगार मंत्रालय में राज्यमंत्री (श्री चन्द्र देव प्रसाद वर्मा): (क) और (ख) जवाहर रोजगार योजना (जे आर वाई), सुनिश्चित रोजगार योजना (ई ए एस), समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम (आई आर डी पी), ग्रामीण जल सप्लाई, ग्रामीण स्वच्छता, सूखाग्रस्त क्षेत्र कार्यक्रम (डी पी ए पी) तथा मरूभूमि विकास कार्यक्रम ग्रामीण क्षेत्र के विकास के लिए प्रमुख कार्यक्रम हैं। पिछले दो वर्षों के दौरान इन कार्यक्रमों के लिए आवंटित कुल निधियों को अनुपत्र में दर्शाया गया है। [देखिए परिशिष्ट 178, अनुपत्र संख्या 29]

(ग) और (घ) राज्य सरकारों से ऐसी कोई शिकायत प्राप्त नहीं हुई है।

Funds for Koel-Karo Hydro project

1186. SHRI GAYA SINGH: Will the PRIME MINISTER be pleased to state:

(a) whether it is a fact that Koel-Karo Hydro Project is being delayed due to negligence of the Centre in releasing funds; and

(b) if so, the reasons therefor?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF POWER (DR. S. VENUGOPALACHARI): (a) and (b) No, Sir. The 710 MW Koel Karo Hydro-electric Project in Bihar was entrusted to National Hydro-electric Power Corporation (NHPC) for execution in August 1980. Active start of the Project was not possible due to continued local resistance. The NHPC has also not been able to mobilise funds for the Project. NHPC will have to rely on market borrowings and/or external assistance to meet a substantial portion of the Project cost which is presently estimated around Rs. 2,400 crores. The Project was posed for assistance to OECF, Japan, but the response of the OECF has not been favourable.

खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों हेतु राज्यों को सहायता

1187. **श्री रामजीलाल:** क्या खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) इस समय खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों को, विशेष रूप से पिछड़े क्षेत्रों के उद्योगों को बढ़ावा देने हेतु सरकार द्वारा राज्यों को क्या सहायता उपलब्ध कराई जा रही है; और

(ख) गत तीन वर्षों के दौरान इस संबंध में हरियाणा को कितनी धनराशि उपलब्ध कराई गई और किन-किन क्षेत्रों में इस उद्योग को बढ़ावा मिला है?

खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री दिलीप कुमार राय) (क) और (ख) खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों में पूंजी निवेश को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने नीतियों को उदारीकृत किया है और अल्कोहल पेयों के किण्वन और आसवन तथा लघु क्षेत्र के लिए आरक्षित मदों को छोड़कर सभी खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों को लाइसेंसमुक्त कर दिया है। सरकार ने विभिन्न वित्तीय राहतें भी उपलब्ध कराई हैं और घरेलू/अनिवासी भारतीय/विदेशी पूंजी निवेश को बढ़ावा देने के लिए उपाय किए हैं इसके लाभ हरियाणा राज्य को भी उपलब्ध हैं। इसके अलावा, मंत्रालय अनेक योजना स्कीमें भी चला रहा है जिसके तहत राज्य सरकार के संगठनों/सहायता प्राप्त/संयुक्त क्षेत्र की कंपनियों/स्वैच्छिक संगठनों/सहकारी संस्थाओं आदि को खाद्य प्रसंस्करण सुविधाओं की स्थापना/अपग्रेडिंग, किसानों के साथ बैकवर्ड लिंकेज के विकास, विपणन समर्थन, सुअर मांस, पॉल्ट्री और अन्य

मांस तथा मांस प्रसंस्करण सुविधाओं, ट्रूना और अन्य मछली प्रसंस्करण, कोल्ड चेन की स्थापना, खाद्य प्रसंस्करण तथा पैकेजिंग में अनुसंधान और विकास तथा कतिपय क्षेत्रों में जनशक्ति के प्रशिक्षण के लिए वित्तीय सहायता दी जाती है।

पिछले 3 वर्षों के दौरान फल और सब्जी और प्रसंस्करण क्षेत्रों के संबंध में हरियाणा से प्राप्त प्रस्तावों के सिलसिले में 20,890 लाख रुपये की वित्तीय सहायता दी गई है।

बिजली के पारेषण और वितरणों के माध्यम से होने वाली हानि

1188. **श्री राम जेठमलानी:** क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह सच है कि आठवीं पंचवर्षीय योजना के आरंभिक वर्षों की तुलना में वर्ष 1996-97 के दौरान देश में बिजली के पारेषण और वितरण के माध्यम से होने वाली हानि की मात्रा में बढ़ोतरी हुई है;

(ख) यदि हां, तो वर्ष 1992-93 के दौरान और 1996-97 में अब तक बिजली के पारेषण और वितरण के माध्यम से क्रमश: कितनी मात्रा में बिजली की हानि हुई;

(ग) क्या उपर्युक्त वर्षों के दौरान देश में उत्पादित कुल बिजली की मात्रा में भी वृद्धि हुई है;

(घ) यदि हां, तो वर्ष 1992-93 के दौरान और 1996-97 में अब तक क्रमश: कुल कितनी मात्रा में बिजली का उत्पादन किया गया;

(ङ) क्या उपर्युक्त वर्षों के दौरान बिजली की पारेषण और वितरण प्रणाली में सुधार लाने हेतु सरकार ने कोई ठोस उपाय किए थे; और

(च) यदि हां, तो उन उपायों का ब्यौरा क्या है और उन पर अलग-अलग कुल कितनी धनराशि व्यय की गई?

विद्युत मंत्रालय में राज्य मंत्री (डा.एस. वेणुगोपालाचारी): (क) और (ख) जी, नहीं। वर्ष 1996-97 हेतु सूचना की वर्ष के दौरान उत्पादित ऊर्जा, विक्रय और पारेषण एवं वितरण हानियों इत्यादि के वार्षिक आंकड़ों की जानकारी के पश्चात् ही समेकित किया जाएगा। तथापि, आठवीं योजना के प्रथम तीन वर्षों के दौरान पारेषण एवं वितरण हानियों में लगभग 2 प्रतिशत की कमी प्राप्त की गई है, जैसा कि नीचे दिया गया।

वर्ष	आपूर्ति हेतु उपलब्ध ऊर्जा (मि.कि.वा.घ.)	अंतरण एवं वितरण में हानि हुई तथा लेखे में न ली गई ऊर्जा (मि.कि.वा.घं.)	ऊर्जा हानि(%)
1991-92	269136	61439	22.83%
1992-93	282384	61565	21.80%
1993-94	303681	65010	21.41%
1994-95 (अनंतिम)	329628	68729	20.85%
1995-96			
1996-97	आंकड़े अभी उपलब्ध नहीं		

(ग) जी, हां। ऊर्जा का उत्पादन वर्ष 1992-93 में 301 बिलियन कि.वा.घं. से बढ़कर 1994-95 में 380 बिलियन कि.वा.घं. हो गया, जैसाकि नीचे दर्शाया गया है:—

वर्ष	विद्युत उत्पादन (मि.यू.)			
	ताप	जल	न्यूक्लीय	जोड.
1992-93	224485	69833	6748	301066
1993-94	247757	70375	5399	32353
1994-95	262868	82511	5646	351025
1995-96	299606	72513	7965	38008
1996-97 (अप्रैल, 96 से जून, 96)	79247	14877	1861	95985*

*आंशिक रूप से मूल्यांकित आंकड़ों के आधार पर

(घ) से (च) विद्युत वितरण राज्य सरकारों के क्षेत्राधिकार में आता है तथा रा.बि.बो./विद्युत विभाग हानियों की कमी के लिए आवश्यक कदम उठाए जाने हेतु उत्तरदायी हैं। तथापि, केन्द्रीय विद्युत प्राधिकरण ने यूटिलिटियों को अल्पकालीन तथा दीर्घकालीन उपायों की उपलब्धता, रिएक्टिव प्रतिपूर्ति हेतु केपिसिटर जवाहर, उच्च हानियों हेतु उत्तरदायी प्रणाली घटकों को अभिज्ञात करने के लिए ऊर्जा लेखा-परीक्षा करवाकर तथा पारेषण एवं वितरण हानियों हेतु अन्य उपयुक्त उपायों के जरिए अपनी पारेषण एवं वितरण प्रणालियों को बेहतर बनाने की सलाह दी हैं।